भूटान में सकल राष्ट्रीय सुख एक विहंगावलोकन

डॉ० महेन्द्र कुमार शर्मा
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, राजस्थान
ईमेलः mahendrabari108@gmail.com

सारांश

सकल राष्ट्रीय सुख के व्यावहारिक स्वरूप को स्वीकार करना होगा जिसके अन्तर्गत सीमित आंकाक्षाए, नियमित इच्छाएं तथा सीमित भोग के रास्ते समाहित हैं। भोगवाद व सुखवाद के रास्ते को त्याग कर ही सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है। यही इस बौद्धिक या शोध अकादमिक महत्व हो सकता है। फिर भी हम निःसंदेह कह सकते हैं कि विश्व परिदृश्य में एक छोटे से देश ने एक अनूठी पहल तो की जो कि एक प्रयोगधर्मी सिद्ध हो सकता है यह पहल बडे राष्ट्रों हेतु एक सार्थक पहल हो सकती है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 29.07.2023
Approved: 26.09.2023

डॉ० महेन्द्र कुमार शर्मा

भूटान में सकल राष्ट्रीय सुख एक विहंगावलोकन

RJPP Apr.23-Sep.23,
Vol. XXI, No. II,

PP. 276-275
Article No. 38

Online available at:
https://anubooks.com/journal/rjpp

सकल राष्ट्रीय सुख (Gross National Happiness) की अवधारणा का जन्म भी भूटान की शाही सरकार ने प्रतिपादित किया जिसकी उन अभी 14–15 वर्ष ही है। अवधारणा का जन्म तो अभी हुआ है परन्तु मूटान में उसका व्यावहारिक स्वता में जाने कितने वर्षों से अमल में लाया जा चुका था। कहने का नाम यही है कि नूदान का दुरूपा समाज (DRUKPA Society) तथा आम जनता की जीवन पद्धति निश्चित रूप से अवधारणा अनुकूल रही और उसमें तारतम्य बना हुआ था। उक्त अवधारणा भूटान का निवासियों के लिये कोई आदर्श की बात नहीं है अपितु उसे व्यवहारिक रूप देन में यही क लोगों को कोई तकलीफ उदानी नहीं पड़ी। भूटान सरकार ने 1988 सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा पर लेखों का संकलन प्रकाशित किया जिसमें इस विशेष दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकाशित संकलन में कुछ भूटान के विद्वानों के लेख है तो कुछ बाहर विद्वानों के यह विशेष संकलन महामहिम भूटान नरेश के राज्याभिषेक की रजत जयन्ती के उपलक्ष में प्रकाशित किया गया। सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा पर पहली बार अंर्तराष्ट्रीय संगोष्ठी 1 जनवरी 2001 में नीदरलैन्ड के जीस्ट (Zeist) स्थान पर आयोजित की गई। संगोष्ठी का मुख्य विषय सकल राष्ट्रीय सुख के दर्शन (Philosophy) अवधारणा पर आयोजित की गई। उल्लेखनीय है कि उक्त अवधारणा को सबसे पहले अभिजात वर्ग (Elite) अर्थात विग्द के Uæ/उच्च समाज ने चुनौती दी। इस संगोष्ठी में नीदरलैंड जर्मनी, अमरीका तथा अन्य देशों ने भाग लिया था। इसके पश्चात् 18–20 फरवरी, 2004 का भूटान की शाही सरकार ने इसी अवधारणा पर एक अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की थी। इस संगोष्ठी में लगभग 82 विद्वानों ने भाग लिया और ये विद्वान लगभग 18 देशों से आये थे। लगभग 400 लोग एशिया, यूरोप तथा उत्तरी दक्षिणी अमरीका से पधारे थे। उसके पश्चात इसी अवधारणा पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 20–24 जून 2005 को कनाडा में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में विशेष बात यह थी कि विद्वानों ने न केवल सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा की विस्तार से व्याख्या की अपितु यह भी माना कि उत्त अवधारणा संकीर्ण (Parochial) दायरे से निकलकर व्यापकता तथा यथार्थ के दायरे में प्रवेश हो चुकी है जिसके परिणामस्वरूप पाश्चात्य देशों में इसकी लोकप्रियता बड़ रही है तथा ग्राहयता की झलक मिल रही है। नवम्बर 1998 के प्रथम सप्ताह में एशिया व पेसिफिक क्षेत्र से आए बुद्धिजीवियों ने सियोल में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचारों का बहुआयामी आदान–प्रदान किया। संगोष्ठी का विषय था सकल राष्ट्रीय सुख यह विषय दार्शनिक सा लगता है लेकिन विचारों के आदान–प्रदान से यह बात उमरी कि विश्व में आधुनिकीकरण के नाम से जो कुछ भी हो रहा है वह सही रूप में राष्ट्रीय विकास नहीं है। उक्त अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में नए दृष्टिकोण व नई सोच का भी प्रस्फुटन दिखाई दिया। संगोष्ठी में भाग लेने लगभग 150 प्रतिनिधि थे और उन्होंने अपने–अपने देश के अनुभवों व विचारों से सभी को अवगत कराया। जिन अनुभवों व विचारों को प्रस्तुत किया गया के क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व विश्व की सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप थे। संगोष्ठी के समापन के बाद समस्त प्रतिनिधि अनौपचारिक वार्तालाप में एक दूसरे से प्रश्न करते हुए देखे गए. आखिरकार इतनी विशाल संगोष्ठी शिविर का अंतिम परिणाम क्या निकला?'' भीतिकवाद चरम सीमा पर है उन देशों में 'आर्थिक विकास व प्रगति के साथ सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा के साथ संतुलन किस प्रकार हो सकता है परन्तु भूटान के अतिनिधि तथा विदेश मंत्री लियो चिनले के लिये सकल राष्ट्रीय सुख

की अवधारणा कोई नई नहीं थी लियो जिममी थिनले का यह मानना था कि जिस अवधारणा को एशिया पॅसिफिक देश के प्रतिनिधि बहुत मुश्किल मानते है ऐसा भूटान के साथ नहीं है। उनका कहना था कि भूटान वर्षों से इस अवधारणा का निष्ठा से पालन कर रहा है और इसमें पूरा खरा उतरा है। भूटान सरकार ने राष्ट्रीय आर्थिक विकास और राष्ट्रीय मूल्यों व संस्कृति की सुरक्षा के बीच संतुलन रखने का प्रयास सदैव किया है एवं पूर्व भूटान गरेश जिगमे दोरजी को वारबुक की नीति यही थी कि राष्ट्रीय आर्थिक विकास व राष्ट्रीय मुल्यों में संतुलन रखना है। इसी निती को वर्तमान भूटान नरेश जिगम तह वार्चुक ने बड़ी निष्ठा के साथ एक धरोहर मानकर अपनाया अमल किया और वह आज भी जारी है भूटान सरकार राष्ट्रीय सुख को बढ़ावा देन के लिए आर्थिक विकास व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को नियंत्रित रखे हुए है।

सियोल में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भूटान के सकल राष्ट्रीय सुख में विचार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया गया। भूटान के विदेश मंत्री ने अपने भाषण में भूटान के आध्यात्मिक सुखा के बारे में अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए और कहा कि भूटान सरकार ने आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सकल राष्ट्रीय सुख का तोप कभी भी नहीं होने दिया। हो सकता है कि विश्व के बहुसंख्यक राष्ट्र वास्तविक राष्ट्रीय सुख को आधुनिकीकरण की प्रतिस्पर्धा में खो चुके हो लेकिन भूटान सरकार ने निरन्तर इसका ध्यान रखा है।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय और प्रांसगिक और सार्थक स्वीकार्य इसके कारण है कि पाश्चात्य देश और तीसरी दुनिया के देश प्रतिस्पर्द्धा में वास्तविक राष्ट्रीय सुख को खोते जा रहे है। भौतिकवाद और सुखवाद के वातावरण में राष्ट्रीय सुख के प्रत्यय पर विचार करना निःसंदेह एक नए आयाम को जन्म देना है। एशिया व पेसीफिक देशों से आए प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया कि आर्थिक विकास व आधुनिकीकरण की पारस्परिक प्रतिस्पृद्धा ने मानवीय मूल्य और आध्यात्मिक सुख को नष्ट किया है। उन सभी का मानना था कि राष्ट्रीय सुख, भौतिकवाद व सुखवाद में निहित नहीं है और यांत्रिक जीवन शैली को निरन्तर अपनाने के फलस्वरूप अब शाश्वत मानवीय मूल्यों की कमी का अहसास होने लगा है।

जिगनी बनले ने सियोल में उक्त आयोजित संगोष्ठी में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष अपने देश के विकास का दर्शन प्रस्तुत किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि विकास का दर्शन तथा सकल राष्ट्रीय सुख के बीच गहरा सम्बन्ध है और राष्ट्रीय सुख की अवधारणा पर्वतीय राष्ट्र के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों तक यदि पहुंचे और इस विशेष सोच को विश्व के देश गंभीरता से अपनी राश्ट्रीय नीतियों में समावेश कर ले तो इस अवधारणा का भूमंडलीयकरण हो सकता है। विदेश मंत्री ने आगे कहा कि जिस प्रकार आर्थिक भूमंडलीकरण का प्रसार व प्रचार हुआ है जिसके फलस्वरूप तीसरी दुनिया के देश सुख के स्थान पर भौतिकवाद अपनाकर पीडित हो रहे है। यदि विश्व के सभी देश भूटान के विकास दर्शन व राष्ट्रीय की अवधारणा को अपनाए तो सकल राष्ट्रीय सुख अवश्य प्राप्त होगा। उनका यह मानना था कि भूटान ने दार्शनिक व राजनीतिक सोच के बीच तारतम्य रखने निरन्तर प्रयास किया है। भुटान सरकार प्रारंभ से विकासशील राष्ट्रों के कटु अनुभवो से अनवरत सीखता रहा है और उसने उस विकास प्रक्रिया की कमी भी अपनाने का मानय नहीं बनाया जिस

प्रक्रिया से अन्य राष्ट्रों ने मानवीय मूल्य व राष्ट्रीय संस्कृति को खोया है। भूटान ने सुनियोजित रूप से यही अथक प्रयास किए है कि राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में उन आध्यात्मिक मूल्यों का लोकनय हो जो मानव सभ्यता का अभिन्न तत्व है।

भूटान ने निरन्तर उन चुनौतियों का सामना किया है जिन्होने उसके मानवीय मूल्यों व आध्यात्मिक जीवनशैली को नष्ट करने का प्रयास किया भूटान ने नैतिकवाद व आध्यात्मकवाद के बीच संतुलन रखने का प्रयास किया है।

सकल राष्ट्रीय सुख के प्रतिपाद्य विषय की प्रासंगिकता आज विश्व विकसित तथा विकासशील देशों के बीच दो भागों में विभाजित है प्रस्तुत प्रोजेक्ट का विषय निःसंदेह वर्तमान समस्याओं का निराकरण करने के लिये चुना गया है। वर्षों से विकसित देशों ने विकासशील देशों को मजबूरियों या बाध्यताओं का सुनियोजित दुरूपयोग किया है और भूमंडलीकरण के आवरण में अभी भी गरीब देशों का शोषण करने की योजना उनके सामने है परन्तु भूटान के द्वारा प्रतिपादित गंभीर सोच ने विकसित देशों को प्रभावित किया है। सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा एक ऐसा सोच है जो पाश्चात्य देशों को प्रभावित करने लगा है उल्लेखनीय है कि भूटान का यह विशेष सोच उनके लिये एक सामान्य है। और ये शताब्दियों से उसी आदर्श में अपने अपने जीवन को अपनाये। हुए थें परन्तु उन देशों के लिये सकल राष्ट्रीय सुख का विचार एक आदर्श की प्रतिमा का की अनुभव कर सकते है। विकसित देशों ने अवधारणा को सहर्ष ग्रहण तो किया है लेकिन उनके समाज में परिवर्तन लाने के लिये भारी प्रयत्न करने होंगे। किसी भी देश के विकास प्रक्रिया में विज्ञान, नई तकनीको तथा आधुनिकरण के उन सभी उपकरणों का प्रयोग करना पड़ेगा यदि अमुक देश को विश्व में अपनी छवि या अपना विशेष स्थान बनाना है।

परन्तु वस्तुतः स्थिति कुछ भिन्न है। यह सही है कि आधुनिक तकलीफ से मानव को सुखवाद एवं भोगवाद की दिशा में धकेला है जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र की संस्कृति य चरीत्र पर कुप्रभाव पड़ रहा है सबसे बड़ी समस्या जो देश व समाज के सामने उभर कर आ रही है वह राष्ट्रीय भावना से जुड़ी हैं राष्ट्र चरीत्र का पतन उतरोत्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है मानव के पारस्परिक संबंध सिर्फ अर्थ से जुड़े गये है। भावनात्मक व सांस्कृतिक संबंधो का निरन्तर लोप हो रहा है हिंसा व आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर है दया महानुभूति व करुणा का भाव धीरे–धीरे समाप्त सा होता दिखाई दे रहा है। परिवार जिसे एक पवित्र संस्था के रूप में देखा जाता था वह बराबर टूट रही है। इन सबके पीछे बाहरी संस्कृति का हावी होना धन की लिप्सा अपने श्रम से अर्जित किये गये धन से असंतोष रातोरात धनवान होने की ललक आदि ऐसी बुराईया है जिन्होने देश और समाज को खोखला कर दिया है।

उक्त बुराईयों से मुक्त होने का रास्ता भूटान ने सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा के माध्यम से सुझाया है। राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया कुछ ऐसी पद्धति से हो जिससे मानव, परिवार, समाज, संस्थाए तथा देश समग्र सुख की दिशा में आगे बढ़े लोकतंत्र को सफलता की मंजिल तक पहुंचाने के लिये सकल राष्ट्रीय सुख का व्यावहारिक मार्ग ढूढना होगा।

अद्भुत पद्धति की कल्याणकारी नीति

भूटान अलग–थलग रहने की नीति को त्याग कर विश्व के अधिकांश देशों के निकट आ गया है। भूटान की जनता को इस बात का भी गर्व है कि वे लोग राष्ट्रीय अस्मिता की सुरक्षा के लिये

आचार संहिता का निष्ठा से पालन करते हैं तथा राष्ट्रीय संस्कृति व परम्पराओ का भी ईमानदारी से निर्वाह करते हैं। द्रुकपा समाज में दो प्रकार के लोग उभर कर आ रहे हैं। एक तबका सिर्फ पर परम्पराबादी है और भूटान की प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा के लिये कभी–कभी आन्दोलित होता हुआ भी सुना जाता है। दूसरी और नई पीढ़ी है जिसने बाहरी शिक्षा प्राप्त कर आधुनिकरण का पक्षधर हैं। उल्लेखनीय है कि आज भूटान दुकपा समाज में 50 प्रतिशत नई शिक्षित युवा पीढ़ी है जिसका यह सोचना है कि भूटान में आधुनिकीकरण हो जाने से प्राचीन संस्कृति फिर भी सुरक्षित रहेगी खुवा पीढ़ी के विचार काफी सुलझे हुए लगते हैं लेकिन प्राचीन संस्कृति के पक्षधरों का समझाने में काफी मानसिक मशक्कत करनी पड़ रही है। शिक्षित युवा पीढ़ी का यह भी कहना है कि सदियों से प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा के दुराग्रह ने भूटान को दक्षिण एशिया के देशों की तुलना में कितना कुछ पीछे छोड़ दिया था। आज भूटान शने–शने प्रगति के मार्ग है भविष्य में काफी कुछ प्रगति की चेतावनी बन गई है 50 प्रतिशत युवा पीढ़ी का सोचना है कि नूटान अब के लिए अनादर व अशिक्षित स्थिति में दिल में रहने के लिए तैयार है इससे किराष्ट्रीयन संस्कृति यदि करण प्रक्रिया और काया यह एक खोया हुआ व रहा है। विचार है कि आधुनिकरण का अर्थ नहान की आज की परिवर्तित स्थिति को देखकर उपकरणों की है जिसके सहारे पाश्चात्य देश में कही आगे बढ़ गये धन की भलाई इसी में है कि देश में नको कुछ इस प्रकार जिससे वह जनकल्या क्रमशः

''सकल राष्ट्रीय सुख (Gross National Happiness) की अवधारणा को यदि विश्व के सभी देश अपनी राष्ट्रीय नीति का हिस्सा स्वीकार कर ले तो मानव समाज सच्चे रूप में सुख की प्राप्ति कर सकेगा। हम सभी को यह अच्छी तरह ज्ञान हो चुका है लेकिन जानबूझ कर उसके प्रति अनभिज्ञ है कि अति भौतिकवाद व आधुनिकरण की प्रतिस्पर्धा में मानव मूल्यों व संस्कृति का उत्तरोत्तर पतन हो रहा है– और सम्पूर्ण मानव समाज तथाकथित सुख प्राप्ति की दिशा में दौड़ रहा है।

संभावित कोणदान

भौतिक सुख भोगवाद की दिशा में आगे बढ़ाता है और भावी दुःख को निरन्तर निमन्त्रण दे रहा है। यदि सही सुख की प्राप्ति करनी है तो भोगवाद की संस्कृति को संतुलित दिशा में ले जाना होगा। आज मानद हिंसा, जघन्य अपराध तथा आतंकवाद की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह कुप्रभाव भोगवाद व सुखवाद की संस्कृति को अपनाने से हुआ है। इस प्रोजेक्ट का योगदान यही है कि भोगवाद–सुखदाद की संस्कृति के साथ उन सांस्कृतिक संस्कृति को भी रखा जायेगा तो मानव का कल्याण निश्चित है और दही मानव धर्म का सशक्त स्तम्भ बन पायेगा।

भूटान में 24 मार्च 2008 को लोकतांत्रिक पद्धति से आम चुनाव हुए। जनता ने अपने मतों का स्वतंत्र व निष्पक्ष वातावरण में प्रयोग किया और 25 मार्च को चुनाव की घोषणा कर दी गई। 9 अप्रैल 2008 को प्रधानमंत्री को शपथ दिलाई और 11 अप्रैल को मंत्रिमण्डल के 10 सदस्यों को अपने अपने पद की शपथ भूटान नरेश ने दिलाई। इस प्रकार भूटान में 100 वर्ष बाद राजतंत्रीय व्यवस्था के स्थान पर पूर्णरूपेण लोकतांत्रिक व्यवस्था का जन्म हुआ।

इसके बाद लोकतंत्र के सामने उन चुनौतियों को भी याद किया जो भविष्य में सामने आने वाली है।

लोकतंत्र को कैसे सफल बनाया जाये कि उसके उपचार के लिये गंभीर विचार को प्रक्रिया भी शुरू हुई। सबसे पहले एक ही मूल को याद किया गया जिसके सहयोग से भावी चुनौतियों पर विजय पाई जा सकती है और वह मूलमंत्र था सकल राष्ट्रीय सुख को एक राष्ट्रीय नीति के रूप में जनता तक पहुँचाना। भूटान सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या यह भी है कि छोटे से पर्वतीय राष्ट्र में आधुनिकरण की गति और प्रक्रिया इतनी आगे बढ़ गई है कि उसकी संस्कृति को शहरीकरण के प्रवाह में लोगों ने ग्रहण करना शुरू कर दिया है और उसमें फलस्वरूप भूटान में सांस्कृतिक संकट (Cultural Crisis) पैदा हो गया है। टी.वी. केबिल व्यवस्था तथा 20 चौनल के शुरू हो जाने से सामाजिक परिवर्तन की साफ–साफ झलक दिखाई देती है। भूटान का शहरी चुनावों के व्यवहार में फिल्मी अंदाज से व्यवहार करना प्रशासकों को अखरने लगा है। वस्तुतः इस प्रकार के परिवर्तन से सकल राष्ट्रीय सुख की सोच की उलझन में दिखाई देती है। शहरी पत्रकारों तथा बुद्धिजीवियों में भी उक्त दार्शनिक सोच पर शंकाए पैदा हो गई है। इस सोच के बारे में भूटान के समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में आलोचनात्मक टिप्पणियां बराबर प्रकाशित हो रही है। एक लोकप्रिय पत्रकार ताशी पी. वांगदी (Tashi P- Wangdi) ने GNH के बारे निम्नलिखित तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

(Tashi P Wangdi) के GNH के बारे में विचार काफी आलोचनात्मक है। GNH एक प्रकार से चाय का प्याला नहीं है जिसे सामान्य रूप से पी लिया जाता है। (GNH is not a cup of tea which is so commdenity taken& Means&to say that GNH is verydifferent to digest).

श्री वागदी का कहना है कि चाय का प्याला पीने से पूर्व यह भी सोचना होगा कि चीनी और दूध कहाँ से आयेगा और कैसे कराया जायेगा।

GNH का दर्शन यथार्थ से कोसों दूर है। GNH के विचारों को बार–बार दोहराया तो जा सकता है लेकिन अमल में लाना मुश्किल है।

GNH का दर्शन एक उच्चकोटि का सोच है यह व्यावहारिक नहीं है। विशेषरूप से भूटान जैसे देश में जहाँ हर चार आदमियों के बीच में एक आदमी गरीबी की रेखा के नीचे जी रहा है। अतः इस प्रकार का दर्शन शुद्ध तो हो सकता है लेकिन भूमंडलीकरण के सन्दर्भ में जमीन से जुड़ा हुआ नहीं है। एक अशिक्षित और बेरोजगार व्यक्ति के लिये खुशी के क्षण कैसे प्राप्त हो सकते हैं जब उसके लिये दोनों वक्त भी रोटी जुटाना एक दुलर्भ कार्य है विमुक्त किन न करोति पापन (अर्थात् भूखा व्यक्ति कौनसा पाप नहीं कर सकता है।'' (Necessity makes the naked man run) अर्थात् आवश्यकता व्यक्ति को नंगे बदन इधर से उधर से दौड़ाता है। भूखे भजन न होई गोपाला ले जाओ अपनी कढ़ी माला।

सन्दर्भ

1. वर्मा, एस.पी., मिश्रा, के.पी. (1969). फॉरेन पॉलिसीज इन साउथ एशिया. नई दिल्ली।
2. वेंकटरमण, टी.के. (1947). इंडिया एंड हर नंबर्स. बम्बई।
3. सांस्कृत्यायन, कमला. (1971). भूटान. दिल्ली।
4. सिंह, नगेन्द्र. (1972). भूटान ए किंगडम इन द हिमालयाज. नई दिल्ली। सिंह, पटवंत. (1966). इंडिया एंड फ्यूचर ऑफ एशिया. लंदन।
5. (1971). द स्ट्रगल फॉर पावर इन एशिया. नई दिल्ली।

6. मिश्रा, आर. सी. (1989). इमरजेन्स ऑफ भूटान. जयपुर। मिश्रा. आर. सी. पर्वतीय क्षेत्रों की राजनीति में भूटान. जयपुर।
7. वर्मा, रवि. इंडियाज रोल इन द इमरजेन्स ऑफ कन्टेम्परेरी, भूटान।
8. रमाकान्त, आर. सी. मिश्रा. (1996). भूटान सोसायटी एण्ड पॉलिटी. (संपादक). इन्डस पब्लिकेशनः नई दिल्ली। उप्रेती, बी.सी. (संपादक). भूटान : डाइलेमा ऑफ चेन्ज इन ए हिमालयन।
9. (2004). किंगडम कॉलिंगा पब्लिकेशन. दिल्ली।
10. मिश्रा, आर. सी. (1906). भूटान इन साउथ एशिया. आविष्कार प्रकाशनः जयपुर।
11. (1977). 'सिक्किम जोइन्स दो मदरलँड'. बन्धु प्रकाशनः भरतपुर।
12. दस्तावेज, प्रतिवेदन व पत्र पत्रिका।
13. कुन्सल (tuenal) – भूटान शाही सरकार द्वारा प्रकाशित समाचार–पत्र, सन् 1980–2002 तक।
14. (1901). रॉयल गवर्नमेंट ऑफ भूटान. डिपार्टमेन्ट ऑफ इन्फोरमेशन ऐटीनेशनल एक्टीविटीज इन सदर्न भूदान. (थिंफू, डिपार्टमेंट ऑफ इन्फोरमेशन, सितम्बर)।
15. (1992). एन अपडेट ऑन दो मूवमेंट. दी डिपार्टमेंट ऑफ इन्फारमेशन. 12 अगस्त. शाही भूटान सरकार विदेश मंत्रालय भूटान एक परम्परागत व्यवस्था तथा परिवर्तन के लिये शक्तियां (थिंफू गृह मंत्रालय, 1993). दक्षिणी भूदान की समस्या राष्ट्रीय अस्मिता संकट में (थिंफू गृह मंत्रालय 1993)।
16. आधुनिक भूटान डॉ. आरसी मिश्रा, डॉ. धर्मपाल सिंह